(C) KENDRIYA VIDYALAYA

नेल्सन मंडेला

दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद विरोधी आंदोलन के पुरोधा और पहले अश्वेत राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला का गुरुवार रात निधन हो गया। वह 95 वर्ष के थे। मंडेला पिछले कुछ महीनों से फेफड़ों में संक्रमण के शिकार थे और जोहांनसबर्ग स्थित अपने घर में स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे।

दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति जैकब जुमा ने मंडेला के निधन की आधिकारिक सूचना दी। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद विरोधी आंदोलन के दौरान वह लगभग तीन दशकों तक जेल में बंद रहे थे। वह अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस 'एएनसी' पार्टी से जुड़े हुए थे।

राष्ट्र के नाम अपने शोक संदेश में राष्ट्रपति जैकब जुमा ने देशवासियों से कहा कि दक्षिण अफ्रीका के लोकतंत्र के संरक्षक और हमारे प्यारे नेल्सन मंडेला अब हमारे बीच नहीं रहे।

मंडेला के अंहिसावादी रवैये और गांधीवादी तौर-तरीकों के कारण उन्हें अफ्रीकी गांधी कहकर पुकारा जाता है। साल 1993 में उनके इसी तेवर को सम्मान देते हुए उन्हें नोबेल पुरस्कार से नवाजा। दक्षिण अफ्रीका की राजनीति में अहम भूमिका निभाने वाली पार्टी अफ्रीकन नेशनल

कांग्रेस 'एएनसी' के वह अध्यक्ष भी रहे हैं और 1994 से 1999 के दौरान उन्होंने दक्षिण अफ्रीका की बागडोर भी संभाली थी।

भारत के साथ मंडेला के संबंध मधुर रहे है वह महात्मा गांधी के सत्य और अंहिसा के मार्ग पर चलने में व्यापक विश्वास करते थे। भारत सरकार ने उनके गांधीवादी विचारधारा को और अलंकृत करते हुए उन्हें 1990 में भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार 'भारत रत्न' से सम्मानित किया।

दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति के निधन के पश्चात देश में राष्ट्रीय शोक की घोषणा कर दी गई है और राष्ट्रध्वज को आधा झुका दिया गया है। राष्ट्रपति जैकब जुमा ने अपने संदेश में कहा कि मंडेला का अंतिम संस्कार पूरे राजकीय सम्मान के साथ किया जाएगा। मंडेला का जन्म 18 जुलाई 1918 को दक्षिण अफ्रीका के केप प्रांत में हुआ था। 1999 में सक्रिय राजनीति से लगभग दूर रहने के बाद वह अपना ज्यादातर समय सामाजिक कार्यो में लगाते थे।